

Padma Bhushan



SMT. SUMITRA MAHAJAN

Smt. Sumitra Mahajan is the former Speaker of Lok Sabha. She has a long and distinguished innings in public service.

2. Born on 12th April, 1943, to Smt. Usha and Shri Purushotam Neelkanth Sathe in Chiplun, Maharashtra, Smt. Mahajan's early reading habits exposed her to ideas and ideals of notable historical personalities and leaders like Chatrapati Shivaji Maharaj and his Mother Jijabai, Swatantra Veer Savarkar, Lokmanya Tilak and so on, as both her parents inculcated in her, values of nationalism and service to the society. Life and leadership qualities of Devi Ahilya Bai Holkar deeply inspired her and deeply imprinted the fervour and value of Governance and selfless public service. The impact of all this, laid the foundation of her 40 year long illustrious carrier in public affairs. Smt. Mahajan is a Law graduate and also holds a post-graduate degree in Psychology. She got married to Jayant Mahajan, a noted lawyer, in 1965.

3. After starting as a Corporator, Smt. Mahajan was first time elected in 1989 to Lok Sabha from Indore. She went on to represent the same constituency for record eight consecutive terms in Lok Sabha. As a senior and distinguished Member of Lok Sabha, she earned respect and admiration across party lines. She also served as a Union Minister of State from 1999 to 2004 and her interventions accelerated the introduction of Gender Budgeting and improving the service conditions of Anganwadi workers. During her tenure, she instituted five national awards to recognize exceptional work done by women for society by the name of 'Stree Shakti Puraskar'.

4. Smt. Mahajan was elected unanimously as the Speaker of the 16th Lok Sabha in 2014. As the Speaker of Lok Sabha, Smt. Sumitra Mahajan not only upheld the principles and values of parliamentary traditions in an objective and non-partisan manner, but also enhanced the prestige of the august office. Smt. Mahajan took several pathbreaking initiatives to further streamline parliamentary practices and procedures and strengthen the roots of democratic values enshrined in our Constitution. One seminal contribution of her as the Speaker Lok Sabha was creation of Speaker's Research Initiative (SRI), an interactive forum, which provided an interface between Members of Parliament and domain experts to assist them for a more effective role in law-making, parliamentary debates and to respond to complex issues of national and international importance. She took the laudable initiative of organizing the first of its kind, a two-day National Conference of Women Legislators in 2016 with the theme "How empowered women can empower the Nation". Smt. Mahajan has always emphasized that women parliamentarians and legislators are the force behind empowering the nations and are the true enablers for achieving the Sustainable Development Goals. She also introduced Fellowship and Internship programs for young students to familiarize with Parliamentary democracy and benefit the institute from new ideas and energy from the youth. She also gave a thrust to parliamentary diplomacy during her tenure as the Speaker of Lok Sabha. Hankuk University of Foreign Affairs (Seoul) conferred her with Honorary Doctorate.

5. Smt. Mahajan will be remembered in the history of India's Parliamentary Polity as an eminent Parliamentarian, a distinguished Speaker of Lok Sabha, for her value-based politics and for her amiable and affable nature which have endeared her to all. No wonder that she is lovingly called as "Tai" (elder sister) by one and all. In her own humble way, she has significantly contributed to strengthening the robust parliamentary polity in the country.



श्रीमती सुमित्रा महाजन

श्रीमती सुमित्रा महाजन लोक सभा की पूर्व अध्यक्ष हैं। उन्होंने लम्बे समय तक विशिष्ट जनसेवा की है।

2. 12 अप्रैल, 1943 को चिपलुन, महाराष्ट्र में श्रीमती उषा और श्री पुरुषोत्तम नीलकंठ साठे के घर जन्मी, श्रीमती महाजन को बचपन से ही पढ़ने में रुचि थी। वह छत्रपति शिवाजी महाराज और उनकी माता जीजाबाई, स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर, लोकमान्य तिलक और ऐसी ही उल्लेखनीय ऐतिहासिक विभूतियों और नेताओं के विचारों और आदर्शों से परिचित हुईं। उनके माता-पिता दोनों ने उन्हें राष्ट्रवाद तथा समाज सेवा के मूल्यों की शिक्षा दी। देवी अहिल्याबाई होल्कर के जीवन और नेतृत्व गुणों ने उन्हें अत्यंत प्रभावित किया और उनमें शासन एवं निःस्वार्थ जनसेवा की उत्कृष्ट भावना और गुण पैदा किए। इस सबके प्रभाव से, उनके 40 साल के शानदार सार्वजनिक कार्य की नींव पड़ी। श्रीमती महाजन विधि स्नातक हैं और मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर भी हैं। 1965 में उन्होंने प्रसिद्ध वकील, जयंत महाजन से विवाह किया।

3. एक पार्षद (कॉरपोरेटर) के रूप में शुरुआत करने के बाद, श्रीमती महाजन पहली बार 1989 में इंदौर से लोक सभा के लिए चुनी गईं। उन्होंने लगातार आठ बार लोक सभा में एक ही निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। लोक सभा के एक वरिष्ठ और प्रतिष्ठित सदस्य के रूप में, उन्होंने सभी पार्टियों के लोगों का सम्मान और प्रशंसा अर्जित की। उन्होंने 1999 से 2004 तक केंद्रीय राज्य मंत्री के रूप में भी काम किया और उनके प्रयास से जेंडर बजटिंग की शुरुआत हुई और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की सेवा शर्तों में सुधार हुआ। अपने कार्यकाल में, उन्होंने महिलाओं द्वारा समाज के लिए किए गए असाधारण कार्यों को सम्मानित करने के लिए 'स्त्री शक्ति पुरस्कार' के नाम से पाँच राष्ट्रीय पुरस्कारों की स्थापना की।

4. श्रीमती महाजन को 2014 में सर्वसम्मति से 16वीं लोक सभा की अध्यक्षा चुना गया। लोक सभा अध्यक्षा के रूप में, श्रीमती महाजन ने न केवल एक वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष तरीके से संसदीय परंपराओं के सिद्धांतों और मूल्यों को बरकरार रखा, बल्कि इस गरिमामय पद की प्रतिष्ठा को भी बढ़ाया। श्रीमती महाजन ने संसदीय प्रथाओं और प्रक्रियाओं को और मजबूत करने और हमारे संविधान में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों की जड़ों को मजबूत करने के लिए कई अग्रणी पहलें कीं। लोक सभा अध्यक्षा के रूप में उनका एक अहम योगदान स्पीकर्स रिसर्च इनिशिएटिव (एसआरआई) शुरू करना था, जो एक इंटरैक्टिव फोरम है, जिसने कानून बनाने, संसदीय बहस में अधिक प्रभावी भूमिका निभाने और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के जटिल मुद्दों पर प्रतिक्रिया देने के लिए संसद सदस्यों और डोमेन विशेषज्ञों के बीच एक इंटरफेस उपलब्ध कराया। उन्होंने 2016 में पहली बार "सशक्त महिलाएं राष्ट्र को कैसे सशक्त बना सकती हैं" विषय पर महिला विधायकों के दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन की प्रशंसनीय पहल की। श्रीमती महाजन ने हमेशा इस बात पर बल दिया है कि महिला सांसदों और विधायकों में राष्ट्रों को सशक्त बनाने की ताकत है और वे स्थायी विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सच्ची मददगार हैं। उन्होंने युवा छात्रों को संसदीय लोकतंत्र से परिचित कराने और युवाओं के नए विचारों और ऊर्जा से संस्थान को लाभान्वित करने के लिए फ़ैलोशिप और इंटरनशिप कार्यक्रमों की शुरुआत की। उन्होंने लोक सभा अध्यक्षा के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान संसदीय लोकतंत्र पर भी बल दिया। हानकुक यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन अफेयर्स (सियोल) ने उन्हें मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया।

5. श्रीमती महाजन को, उनकी मूल्य-आधारित राजनीति के लिए और उनके सौम्य और मिलनसार स्वभाव के लिए, जिसने उन्हें सबका प्रिय बना दिया, भारत के संसदीय इतिहास में एक प्रतिष्ठित सांसद, लोक सभा की एक सम्मानित अध्यक्षा के रूप में याद किया जाएगा। यह स्वाभाविक ही है कि सभी उन्हें प्यार से "ताई" (बड़ी बहन) बुलाते हैं। उन्होंने अपने विनम्रतापूर्ण तरीके से, देश में सुदृढ़ संसदीय शासनतंत्र को और मजबूत बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है।